औपचारिक बनाम अनौपचारिक शिक्षा

Formal versus informal education

एक दृष्टिकोण से शिक्षा के दो प्रकार हैं जिन्हें औपचारिक शिक्षा तथा अनौपचारिक शिक्षा कहते हैं।

अनौपचारिक शिक्षा का अर्थ वह शिक्षा है जो माता-पिता के द्वारा पारिवारिक वातावरण में दी जाती है। बच्चों की जीवन का पहली पाठशाला परिवार है और उनके प्रथम शिक्षक माता पिता है। माता पिता अपने बच्चों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा देते हैं। वह बच्चों को बुरी आदतों से अलग रहने तथा अच्छी आदतों को ग्रहण करने का नैतिक शिक्षा देते हैं। इस प्रकार बच्चों में ज्ञान की वृद्धि होती है। नैतिक पक्ष का भी विकास होता है इसके अतिरिक्त हुए अपने माता-पिता की बानी तथा उनके व्यवहार को निरीक्षण करते हैं और इस आधार पर नई नई बातों को सीख लेते हैं। इसे अप्रत्यक्ष शिक्षण भी कहते हैं। परिवार के अतिरिक्त पड़ोस खेल का मैदान भी अनौपचारिक शिक्षा के स्रोत हैं। बच्चे का कुछ अपने पड़ोसियों के साथ गुजरता है। अतः बच्चे अपने पड़ोसियों से भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कुछ सीखते रहते हैं। यदि पड़ोसी अच्छे होते हैं तो बच्चे अच्छी शीलगुणों को सीख लेते हैं और यदि पड़ोसी अच्छे नहीं होते हैं अर्थात बुरे होते हैं तो बच्चे बुरे शीलगुणों को भी सीख लेते हैं। इसके साथ-साथ खेल के मैदान से बच्चे अच्छे या बुरे शीलगुणों को सीख पाते हैं, जो बच्चे खेल में अच्छे होते हैं और खिलाड़ी सीखते हैं तो बच्चे भी अच्छे शीलगुणों को अर्जित कर लेते हैं ,लेकिन जब खेल बुरा होता है या खेल के साथी बुरे होते हैं तो बच्चे बुरे सीख लेते। दूसरी ओर औपचारिक शिक्षा का अर्थ वह शिक्षा है, जो

Scanned with CamScanner

विधिवत रूप से विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा दी जाती है। प्राथमिक विद्यालय ,माध्यमिक विद्यालय तथा विश्वविद्यालय के माध्यम से मिलने वाली शिक्षा को औपचारिक शिक्षा कहते हैं। अतः औपचारिक शिक्षा के विकास में शैक्षणिक संस्थाओं तथा नियुक्त शिक्षकों की भूमिका सर्वोपरि होती है । बालकों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में औपचारिक शिक्षा तथा अनौपचारिक शिक्षा दोनों का महत्वपूर्ण स्थान होता है, लेकिन बालकों के प्राथमिक सामाजिकरण में अनौपचारिक शिक्षा का हाथ अधिक होता है। बच्चे का मस्तिष्क कच्चा होता है जिस पर किसी चीज की छाप आसानी से पढ़ सकती है। अतः ऐसी परिस्थिति में बालकों में अनौपचारिक शिक्षा का गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे अपने परिवार से जो कुछ भी सीखते हैं, वह लंबे समय तक कायम रहता है । इसलिए यह कहा गया है कि बच्चे जो है मनुष्य का पिता होता है ।

इस दिशा में किए गए अध्ययनों से भी बच्चों के व्यक्तित्व एवं चरित्र के विकास में अनौपचारिक शिक्षा का महत्व प्रमाणित होता है Mead,1950 ने इरापिश कल्चर तथा मुंडागुमोर कल्चर के बच्चों का तुलनात्मक अध्ययन किया और देखा कि इरापिश कल्चर के बच्चे में व्यक्तित्व के अच्छे शीलगुण अधिक थे उन्होंने इसकी व्याख्या करते हुए कहा कि इसका कारण दोनों संस्कृतियों में दी जाने वाली अनौपचारिक शिक्षा की भिन्नता है।

ब्रॉडी ,1958 के अध्ययन से भी पता चलता है कि व्यक्तित्व के विकास में अनौपचारिक शिक्षा का सार्थक महत्व होता है। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि जिस परिवार में बच्चों को उचित शिक्षा दी जाती थी उस परिवार के बच्चे अधिक संतुलित होते थे। इसके विपरीत जिस परिवार में अनौपचारिक शिक्षा दोषपूर्ण हो जाती थी ,उस परिवार के बच्चों में चरित्र विकृति की संभावना अधिक होती थी।

म्यूक ,1988 के अध्ययन से भी अनौपचारिक शिक्षा के महत्व पर प्रकाश पड़ता है। उन्होंने भिन्न भिन्न संस्कृतियों में दी जाने वाली पारिवारिक शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने कहा कि बालकों के अपराधी एवं समस्यात्मक व्यवहारों का मुख्य कारण अनौपचारिक शिक्षा का दोषपूर्ण होना है । उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि जिन परिवारों में स्वास्थ्य अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था रहती है, वहां के बच्चे मानसिक रूप से स्वस्थ्य पाए गए।

भारतीय परिवेशों में किए गए अध्ययनों से भी अनौपचारिक शिक्षा के महत्व पर प्रकाश पड़ता है। मोहन ,1991 कुमार, 1994 आदि ने अध्ययनों से पता किया है कि मानव जाति के पूर्वधारणाओं के विकास में अनौपचारिक शिक्षा का हाथ अधिक होता है। हसन तथा सरकार, 1975 के अध्ययन से पता चलता है कि जातिगत पूर्वधारणाओं तथा सांप्रदायिक पूर्वधारणाओं के विकास में अनौपचारिक शिक्षा का हाथ अधिक होता है।

जहां तक औपचारिक शिक्षा के महत्व का प्रश्न है, इसका अधिक प्रभाव बच्चों के द्वितीयक सामाजिकरण पर अधिक पड़ता है। क्लीनवर्ग ,1966 ने अपने अध्ययन के आधार पर इस विचार को प्रमाणित किया।

Scanned with CamScanner

भारतीय परिवेश में श्री निवास का अध्ययन महत्वपूर्ण है। उन्होंने निष्कर्ष के रूप में कहा कि संस्कृताइजेशन तथा डीसंस्कृताइजेशन को निर्धारित करने में औपचारिक शिक्षा का बहुत बड़ा हाथ होता है । ज्ञान अर्जन के लिए औपचारिक शिक्षा का योगदान अनौपचारिक शिक्षा की तुलना में अधिक होता है। प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय के स्तर तक ज्ञानार्जन को प्रोत्साहित किया जाता है। बोस्टन ,1977 के विचार से भी इस बात की पुष्टि होती है।

विद्यार्थियों के लिए निर्देश

विद्यार्थियों को निर्देशित किया जाता है कि औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा के बीच अंतर को पढ़ें ,समझें एवं किसी तरह की कठिनाई होने पर व्हाट्सएप पर संपर्क करें ।

समाप्त

Scanned with CamScanner